International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सिन्धु घाटी की सभ्यता– एक ऐतिहासिक विश्लेषण

Rajiv Maan
Lecturer in History
Department of Education, Haryana
E-mail: rajivmaan12@gmail.com

शोध–आलेख सार– सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की ऐसी प्रथम ज्ञात सभ्यता है जिसके बारे में कुछ निश्चित जानकारी अवश्य मिलती है। इसके प्रमाण 1922–23 में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा श्री राखलदास बैनर्जी की अध्यक्षता में करवाई गई खुदाई से प्राप्त हुए हैं। सिंध के लरकाना जिले में मोहनजोदड़ो नामक नगर तथा पंजाब के मांटगोमरी जिले में दयाराम साहनी के नेतृत्व में करवाई गई खुदाई से हड़प्पा नगर के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिनसे पता चलता है कि ये दोनों नगर एक ही सभ्यता से सम्बन्धित हैं। जैसे–जैसे खुदाई का कार्य आगे बढाया गया तो इस सभ्यता के विस्तृत क्षेत्र का पता चला तथा इसे इराक की सभ्यताओं के समकालीन माना गया। चूंकि इस सभ्यता के अवशेष सबसे पहले सिन्धु नदी की घाटी में प्राप्त हुए हैं, इसलिए इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर इस सभ्यता का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द– सिन्धु घाटी, पुरातत्व विभाग, खुदाई, अवशेष, नगर–निर्माण, सभ्यता का विस्तार, स्नानागार, नगर योजना।

भूमिका– वस्तुतः सिन्धु घाटी की सभ्यता ताम्र तथा कांस्य युगीन सभ्यता रही थी[1], जिसका पता भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई के बाद प्राप्त अवशेषों से चलता है।

[1] एस.एल. नागोरी एवं कान्ता नागोरी, प्राचीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 29.

वास्तव में विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में जिन दिनों विभिन्न जातियां उपजाऊ भूमि–भागों की खोज में भटक रही थी, इन परिभ्रमणशील जातियों ने पुरानी सभ्यताओं को नष्ट कर दिया। तत्कालीन युग की यह विशेषता भारत में भी दृष्टिगोचर हुई। विकास, प्रसार, संघर्ष, सम्पर्क और समन्वय एक महान उदाहरण भारत में भी उपस्थित हुआ।[2] 1922 से पहले इस सभ्यता के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी और हम भारतीय सभ्यता का इतिहास केवल वैदिक युग से ही शुरू करते थे, परन्तु सिन्धु घाटी से प्राप्त उपकरणों तथा अवशेषों ने हमें यह सोचने पर विवश किया कि आर्य सभ्यता से पहले भी भारत में एक बहुत समृद्ध और उन्नत सभ्यता विद्यमान थी जो मिस्र तथा मैसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यता के समकालीन होने के साथ–साथ उनसे अधिक श्रेष्ठ थी। इस सभ्यता के बारे में लिखा गया है कि अन्य प्राक्–आधुनिक नगराश्रयी संस्कृति के समान ही हड़प्पा सभ्यता की भी संस्कृति थी जो भौतिक रूप से कृषि मूलक थी।[3]

सभ्यता का विस्तार – सिन्धु घाटी की सभ्यता का विस्तार क्षेत्र सिन्धु नदी की घाटी से ज्यादा फैला हुआ था। सिन्धु नदी के पास इसके अधिक फैलाव के कारण इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता कहा गया है। इस सभ्यता का विस्तार अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, पंजाब, सिन्ध, राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, पं0 उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा तक माना जाता है। इसके दो प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा प्रमुख हैं। पिगट का मानना है कि शायद ये दोनों बड़े नगर एक बड़े साम्राज्य की राजधानी रहे होगें। राजस्थान के कालीबंगा नामक स्थान पर जो सामग्री प्राप्त हुई है उनमें से कुछ तो सिन्धु सभ्यता से पहले की प्रतीत होती है। इसके अन्य मुख्य नगर राजस्थान में कालीबंगा, गुजरात में लोथल, हरियाणा में बनवाली तथा राखीगढी भी हैं। पंजाब में रोपड़ तथा उतरप्रदेश के मेरठ जिले के आलमगीर नामक जगह पर भी इस सभ्यता के बहुत सारे अवशेष प्राप्त

[2] गजानन माधव मुक्ति बोध, भारतः इतिहास और संस्कृति, पृ0 23.
[3] रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600ई0 तक, पृ043.

हुए हैं। वस्तुतः इस सभ्यता के दो प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा क्रमशः सिन्धु नदी के दायें तथा रावी नदी के बायें तट पर स्थित थे।[4]

शिवदत्त ज्ञानी ने लिखा है– 'पंजाब के मांटगोमरी जिले के हड़प्पा व सिंध के मोहनजोदड़ों में एक प्राचीन नगर के खण्डर व बहुत सी अन्य वस्तुऐं पाई गई जिनके सहारे इतिहासकारों ने यह निष्कर्ष निकाला कि आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व एक विकसित सभ्यता विद्यमान थी, जिसके प्रमाण वहाँ मिलने वाले अवशेष हैं।'[5] इसी तरह द्विजेन्द्र नारायण झा ने लिखा है कि सिन्धु संस्कृति का उद्भव भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी हिस्से में हुआ मालूम होता है, यह समकालीन मिस्र और मैसोपोटामिया की सभ्यताओं से अधिक बड़े क्षेत्र में फैल गई थी।[6] अतः इस सभ्यता के प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, चँहुदड़ो, सूरकोतदा, बनवाली, धोलावीरा, राखीगढ़ी, बालाकोट, देशलपुर, दैमाबाद, रोजदी, कुंतासी, हुल्हास, आलमगीरपुर, भगवानपुरा, मिथाथल, मांदा आदि हैं। कुल मिलाकर अब तक इस सभ्यता की खोज में एक हजार स्थानों की खुदाई की जा चुकी है, जहाँ से अलग–अलग प्रकार के अवशेष प्राप्त हो चुके हैं।

चूंकि इस सभ्यता के काल को लेकर विभिन्न विद्वान एकमत नहीं हैं। सर जॉन मॉर्शल के अनुसार इसके विकास का काल 4000ई0पू0 से 2500ई0पू0 तक है। आर.के. मुखर्जी इसके विकास का काल 3250ई0पू0 से 2750 ई0पू0 मानते हैं। डॉ0 व्हीलर ने इसका काल 2800ई0पू0 से 1500ई0पू0 माना है। डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार इसके प्रसार का काल 3500ई0 से 2500ई0 तक है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह सभ्यता

[4] सतीशचन्द्र काला, सिन्धु सभ्यता, पृ0 11
[5] शिवदत्त ज्ञानी, वेदकालीन समाज, पृ0 21.
[6] डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, पृ0 29.

मिस्र तथा मैसोपोटामिया की समकालीन होने के कारण इसका काल 3200ई0 पू0 से 2750 ई0पू0 तक माना जा सकता है।

नगर योजना– इस सभ्यता में मोहनजोदड़ो नगर के अवशेषों से पता चलता है कि इसकी सड़के व भवन एक निश्चित योजना के अनुसार बसाए गए थे। सड़के चौड़ी और सीधी होती थी जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। ऐसा अनुमान है कि इस सडक पर काफी यातायात रहा होगा। ये सारी सड़के मिट्टी से निर्मित थी, लेकिन सफाई व्यवस्था पूरी थी। नगर की गलियां 9 फुट से 12 फुट तक चौड़ी थी। प्राप्त अवशेषों से भी प्रमाणित है कि रात में सड़कों पर प्रकाश की व्यवस्था भी थी। इस सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त वास्तुकला के खण्डरों से पता चलता है कि मकान पक्की ईंटों के बने होते थे और छत पर पहुंचने के लिए सीढियां भी थी। प्रत्येक घर में रहने के लिए कमरों के अतिरिक्त रसोईघर, खुला आंगन एवं कुआं था। प्रवेश द्वार के पास ही कोने में स्नानागार तथा शौचालय होते थे। खुदाई से एक विशालकाय ईमारत के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो 200फीट लम्बी तथा 115 फीट चौड़ी थी। हड़प्पा की खुदाई में एक विशाल अन्नागर के अवशेष भी मिले हैं। इसकी लम्बाई 50 फीट और चौड़ाई 20 फीट थी, हो सकता है कि यह राजकीय अन्नागार हो, जिसमें संकट के लिए अन्न का संग्रह किया जाता हो। यहाँ एक आयताकार ताल के अवशेष भी मिले हैं जिसकी लम्बाई 11.88 मी0, चौ0 7.01 मी0 और गहराई 2.43 मी0 है।[7] वस्तुतः नगरों की साफ–सफाई का भी पूरा ध्यान रखा जाता था तथा जगह–जगह मिट्टी के बर्तन रखे जाते थे या सड़कों के किनारे गड्डे खोद दिये जाते थे, नालियां पक्की बनाई जाती थी। ऐसा मालूम होता है कि इस सभ्यता का नगर प्रबन्ध बड़ा ही सुव्यवस्थित व सुन्दर रहा होगा।

[7]डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, पृ0 31.

सामाजिक जीवन– इस सभ्यता के लोग नगरों में रहते थे और उनका सामाजिक जीवन काफी विकसित था। गांव में विभिन्न प्रकार के वर्गों में भी कृषक, बढई, कुम्हार, चरवाहे आदि रहते थे तथा समाज की ईकाई परिवार थी। ये लोग खाने–पीने के शौकीन थे तथा गेंहूँ, जौं, चावल, तिल, खजूर, तरबूज, नींबू आदि से परिचित थे। ये लोग मांस भी खाते थे। वस्त्रों में, सूती, रेशमी एवं उनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। स्त्री और पुरूषों को आभूषण पहनने का शौक था। आभूषण सोने तथा चांदी के निर्मित होते थे। अमीर लोग चांदी, सोना, हाथी दांत और बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण पहनते थे। ये लोग केश श्रंगार भी करते थे तथा मनोरंजन के साधनों का प्रयोग भी होता था। ये लोग अपने मृतकों का संस्कार बड़े सम्मान से करते थे तथा इस समाज में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।[8]

धार्मिक जीवन– यद्यपि इस सभ्यता के अवशेषों के आधार पर निश्चित तौर पर तो यह नहीं कहा जा सकता कि इन अवशेषों में कोई देव मन्दिर भी था। फिर भी मोहरों पर अंकित आकृतियों से इनके धर्म का अनुमान लगाया जा सता है। ये लोग प्रकृति देवी अथवा मातृदेवी, पशुपति अथवा महायोगी शिव, वृक्षों में पीपल, स्वास्तिक के रूप में सूर्य, पशुओं में नंदी बैल, अग्नि और जल की पूजा करते थे। एक मोहर से पता चलता है कि ये लोग नाग देवता की भी पूजा करते थे। इस समय पशु बलि का भी प्रचलन था। ये लोग मृतकों का संस्कार सम्मान से करते थे।

अर्थव्यवस्था– इस सभ्यता के अवशेषों से पता चलता है कि सिन्धु प्रदेश की भूमि उपजाऊ थी। ये लोग गेहूँ , जौ, चावल, मटर, तिल और कपास की कृषि करते थे तथा पशु भी पालते थे। इनको शिल्प कला का भी ज्ञान था। इस समय व्यापार भी होता था।

[8] एस.एल. नागोरी एवं कान्ता नागोरी, प्राचीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 33–34.

व्यापार के दृष्टिकोण से जल और थल मार्ग दोनों उपयोगी थे। विदेशी व्यापार ईरान, अफगानिस्तान, मैसोपोटामिया तथा क्रीट आदि देशों से होता था। इनके पास माप–तोल के साधन भी थे।

लिपि– मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की खुदाई से लगभग 5000 मोहरें प्राप्त हुई हैं, जिन पर चित्रमयी लिपि है। इसका अर्थ यह है कि ये लोग चित्रों के रूप में पढना लिखना अवश्य जानते थे फिर भी इस लिपि की यह कमी है कि इसको पूर्ण रूप से आज तक नहीं पढा जा सका है।

सभ्यता का पतन– चूंकि यह एक काफी विकसित सभ्यता थी। परन्तु इसका विनाश ईसा के कोई 2500 साल पहले बाह्य आक्रमण द्वारा हुआ और यह आक्रमण बहुत बर्बतापूर्ण थे।[9] बी. स्टेन के अनुसार यह माना जाता है कि 3500ई0पू0 स्थापित यह संस्कृति 1500ई0पू0 आकर नष्ट कर दी गई।[10] इतिहासकारों का मानना है कि इसके विनाश का प्रमुख कारण बाह्य आक्रमण, सिन्धु नदी की बाढें, भौगोलिक परिवर्तन, नदी के जल का सूख जाना, भूकम्प आदि कुछ भी हो सकता है फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता एक समृद्ध व विकसित सभ्यता एक समय के बाद इतिहास बनकर रह गई।

सारांश–सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की प्रथम ज्ञात सभ्यता है, जो अब तक की विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता भी मानी जाती है। भारत को इस प्राचीन सभ्यता का प्रमुख देश माना गया है। यद्यपि इसके काल विभाजन को लेकर काफी मत प्रचलित हैं और इसकी लिपि भी आज तक पढी नहीं गई है ,फिर भी नगर योजना की दृष्टि से यह एक उन्नत सभ्यता थी। इसके लोगों का साामजिक व धार्मिक जीवन आधुनिक सभ्यता की

[9] गजानन माधव मुक्ति बोध, भारतः इतिहास और संस्कृति, पृ0 27.

[10] बी.स्टेन, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ0 48

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सभी विशेषता समेटे हुए है। अतः सिन्धु नदी के क्षेत्र में अधिकांश रूप से फैली यह सभ्यता आधुनिक नगरों के समान ही नगरीय जीवन की पहचान लिये हुए थी।

सन्दर्भ सूची–

1. शिवदत्त ज्ञानी, वेदकालीन समाज, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1967.
2. धर्मपाल अग्रवाल एवं पन्नालाल अग्रवाल, भारतीय पुरैतिहासिक पुरातत्व, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1975.
3. सुमन गुप्ता, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, स्वामी प्रकाशन जयपुर, 2000.
4. रोमिला थापर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास , ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
5. डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
6. प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत– लगभग 600ई0 तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
7. कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010.
8. बी.स्टेन, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, 2012.
9. ए.एस.डूडी, एन्सियंट हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेहा पब्लिशर्स , दिल्ली, 2012.
10. रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600ई0 तक, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012.
11. अबुस्सलाम, भारतीय इतिहास, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
12. वासुदेव अग्रवाल, पाणिनीकालीन भारतवर्ष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी, 2014.
13. उपिन्द्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पीयरसन ऐजुकेशन दिल्ली, 2017.